क्या छोड़ा और क्या पाया

1–एक छोड़ा – पदम पाया
2–विना शी छोड़ा – अविना शी पाया
3–हद छोड़ा – बेहद पाया
4–लौकिकता छोड़ी – अलौकिकता पायी
5–विकारों का दंगल छोड़ा – निर्विकार पारद शीं जीवन पाया
6–कखपन छोड़ा –फ्राकदिली पाया
7–नींद का सोना छोड़ा – सोना बन गये
8–व्यर्थ सब छोड़ा – समर्थ सब पाया
9–देह भान छोड़ा – देही बन पाया
10–बेकार अभिमान छोड़ा –स्व का मान पाया
11–वाकपटुता छोड़ी –शान्ति का स्रोत पाया
12–रोना छोड़ा –मुस्कराना पाया
13–आधार छोड़ा – सशक्त बन गये
14–गुरू गोसाई छोड़े – सच्चा सतगुरू पाया
15–अधीनता छोड़ी – अधिकार का आधार पाया
16–उदासी छोड़ी – खुशियों के शहं शाह बन गये
17–झूठ बोलना छोड़ा – सत्यवादी बन गये
18–स्वार्थ छोड़ा – सेवार्थ पाया
19–भक्ति कर्म काण्ड छोड़ा – ज्ञान की रसना पाया
20–जिस्मानी यात्रा छोड़ी – रूहानी यात्रा पाया
21–हठयोग छोड़ा – राज योग पाया
22–चिल्लाना छोड़ा – स्व को चलाना आ गया
23–भक्तपना छोड़ा – बच्चा बन गये
24–लेना छोड़ा – देना आ गया
25–परचिन्तन छोड़ा – स्वचिन्तन पाया
26–एक घर छोड़ा – अनेक सेन्टर पाया
27–देह अभिमान छोड़ा – मृत्यु पर विजय पाया
28–फीलिंग छोड़ा – फरमान वरदार बन गये
29–धक्के खाना छोड़ा – परमात्म मिलन का हाइवे पाया
30–मॉगना छोड़ा – बॉटना आ गया

31–पतन का पथ छोड़ा –उत्थान का मार्ग पाया
32–कंजूसी का सुरंग छोड़ी–दाता पन वरदान मिल गया
33–अ शुद्ध भोजन छोड़ा – निरोगी काया मिल गयी
34–चरणों का दासपना छोड़ा – सबसे सेफ जगह दिलतख्त पाया
35–अवगुणों के जमघट छोड़े–सदगुणों का सरोवर पाया
36–कमजोरियों की झाड़ियो को छोड़ा – शक्तियों का शक्तिशाली इंजेक्शन पाया
37–फैशन का फन्दा छोड़ा – सादगी का सच्चा सौन्दर्य पाया
38–मन की मलीनता का गर्त छोड़ा – दिल की उज्ज्वलता पाया
39–चारों तरफ के फेरे छोड़े– परमात्म प्राप्ति की मंजिल पायी
40–व्यसनों का बन्धन छोड़ा–लम्बी आयु का सुख पाया
41–बनावटीपना छोड़ा–रीयल्टी का अनुभव पाया
42– शरीर को सजाना छोड़ा–आत्मा को श्रृंगार करना आ गया
43–काले कारनामों का काला धन्धा छोड़ा–श्रेष्ठ कर्म करने की कला पाया
44–अनेको का झूठा साथ छोड़ा–एक सच्चा साथी पाया
45–साधनों की संकरी गली छोड़ा–साधना का असीम आकाश पाया
46–मनमत का पिटारा छोड़ा–श्रीमत का अनहद नाद पाया
47–परमत की अनेक राहें छोड़ी–परमात्म मत का सुगम रास्ता पाया
48–कुटिलता की कांटे छोड़े–कोमलता का गुलशन पाया
49–काम वासना को छोड़ी–पवित्रता की स्वर्णिम भासना पायी
50–क्रोध की अग्नि को छोड़ा– शीतलता की सुन्दर झील पाया
51–लोभ की झूठी चाश नी को छोड़ा–सन्तुष्टता का सर्वोच्च धन पाया
52–मोह का मीठा खौफ छोड़ा–नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा को पाया
53–लगाव का जंजीरें छोड़ी– प्रेम का गहरा सागर पाया
54–मान– शान का पिंजरा छोड़ा–ईश्वरीय खुमार पाया
55–ईर्ष्या की आग को छोड़ा–उपकार का स्नेहिल दरिया पाया
56–लौकिक रीति–रिवाजों की गलियॉ छोड़ी–प्रभू प्रीति का राज पाया
57–आवेश का जलजला छोड़ा–स्नेह की सुन्दर मंजरी पाया
58–चंचलता की धूल छोड़ी–रॉयल्टी की रागिनी पाया
59–नाज–नखरों की आदत छोड़ी–राय बहादुर की तालीम पाया
60–कलियुगी दुनिया को छोड़ा–डायमण्ड दुनिया मधुबन पाया

61–जल्दबाजी का दोजखपना छोड़ा–कर्मयोगी बनने के अनुभवी बन गये
62–हिंसा की ऑधी छोड़ा–दया का बहारी मौसम पाया
63–चिन्ताओं की अग्नि छोड़ा–पभु चिन्तन का रस पाया
64–आरोपों–प्रत्यारोंपों का भूत छोड़ा–स्व चेकिंग की गिफ्ट पाया
65–बाहर का खाना छोड़ा–पाक कला में प्रवीणता आ गयी
66–बहाने बाजी की कलाबाजी छोड़ा– सच्चाई पर चलना आ गया
67–वाणी के वाण चलाने छोड़ा–मधुरतम सरगम आ गयी
68–चतुराई का चातुर्य छोड़ा–भोलेनाथ के दिल पर चढ़ पाया
69–जबान का स्वाद छोड़ा–बीमारियों की मेहमानीनवाजी से बच गये
70–अनुमान के अंधकार को छोड़ा– निश्चिन्तता का प्रकाश मिल गया
71–दिलशिकस्ती के काले बादल छोड़े–बहादुरी का सौरभ पाया
72–दिलों की कडुवाहट छोड़ा–निर्मल मन से प्रभु को पाया
73–संस्कारों के टकराव छोड़े–दिलों को जीत एकसाथ रास कर पाया
74–मतभेद के चक्रवातों को छोड़ा–एकमत का सुन्दर परिवार पाया
75–भय के भूत को छोड़ा–जीत का उत्तम स्वाद पाया
76–आधुनिकता के लिबास को छोड़ा–फरिश्तों का स्वरूप पाया
77–भौतिकता की चकाचौंध को छोड़ा–उपरामता का आनन्द पाया
78–हठधर्मिता की जटिलता छोड़ा–सरलता परिधान पाया
79–दैहिकता का रोग छोड़ा–रूहानियत का लिबास पहना
80–भोग विलास का छलावा छोड़ा–वैराग्य का शिखर पाया
81–अति का आधिपत्य छोड़ा–बैलेन्स करने की कला मिल गयी
82–मजबूरियों का लबादा छोड़ा–मजबूती का आगाज मिल गया
83–स्वयं को देह मानना छोड़ा–अमरत्व का स्टैम्प लग गया
84–नकद नारायण का आर्कषण छोड़ा–तृप्ति का असीम सुख पाया
85–समय को गवॉना छोड़ा–सफलता का जादुई चिराग मिल गया
89–संसारिक लाइफ स्टाइल छोड़ा– योगी जीवन जीना आ गया
90–मनमर्जी की दलदल को छोड़ा– सच्चा साहब राजी हो गया
91–शिकायतों का पुलिंदा छोड़ा–चैन की मस्ती का तट पाया
92–प्रभावित होने का नासूर छोड़ा–पॉवर हाउस का कनेक्शन पाया
93–आसक्तियों के रसों को छोड़ा–अनासक्ति का अमृत पाया
94–दुखों के संसार को छोड़ा–दैवीय सुखों का जहॉ पाया

95–नाराजगी की फागी को छोड़ा–राजों को जान राजस्व पा लिया
96–अपेक्षाओं की बैसाखी छोड़ा– शुभेच्छा का अपना गौरव पाया
97–संगदोष की गफलत को छोड़ा–ईश्वरीय संग का रंग लगाया
98–कायरता बेबसी को छोड़ा–हिम्मत की चोटी पर जम्प लगाया
99–इच्छाओं का मनमोहक जाल छोड़ा–अच्छा बनने की चाबी पाया
100–फरियादों का रजिस्टर छोड़ा–फिर–2 याद करने का अनुग्रह पाया
101–मन के बंद दरवाजों को छोड़ा–उमंगों के पंख मिल गये
102–गमों की गर्दिशें छोड़ी–बेगमपुर के बादशाह बन गये
103–आलस्य के डनलप के गद्दे छोड़ा–मौलाई गोद पाय
104–अलबेलेपन की लम्बी चादर को छोड़ा–उन्नति द्वार खुल गया
105–लापरवाही का लूज हाथ छोड़ा–हजार हाथ वाले को पाया
106–इन्तजार की सुस्त पगडंडी छोड़ा–इन्तजाम की उड़ती कला पाया
107–रियेक्ट करने की झूठी शान छोड़ा–रेस्पांस करने का सम्मान पाया
108–बदला लेने की द्वेष भावना को छोड़ा–बदल लेने की जादूगरी को पाया
109–देर से सोना छोड़ा–समय का सद्पयोग करना आ गया
110–झरमुई–झगमुई की उलझनों को छोड़ा–श्रेष्ठ चिन्तन का सूबीरस पाया
111–निन्दा रस के जहरीले पेय को छोड़ा–ऑखों ने विशेषताओं को ढूँढ लिया
112–ना करने का नास्तिकपना छोड़ा–सौभाग्य बनाने का आस्तिकपना आ गया
113–ज्यादा सोचने की आदत को छोड़ा–मनोबल की उर्जा को बढ़ाना आ गया
114–झुटका खाना छोड़ा–तो प्राप्तियों के खजाने को पाया
115–कल–कल करना छोड़ा–चॉसलर का मैडल मिल गया
116–पहले मैं मैं करना छोड़ा–त्याग के भाग्य में आगे पहुँच गया
117–चारों तरफ फेरी लगाना छोड़ा–एक से विश्व के मालिकपने का वर्सा ले लिया
118–हर घाट पर टिप्पड़ घिसाना छोड़ा–उत्साह के हल्केपन को पाया
119–मॉगने के भिखारीपने को छोड़ा–भरपूरता का शाही अंदाज पाया
120–वर्तमान को गवॉना छोड़ा–स्वर्णिम भविष्य का भाग्य पाया
121–पास्ट के भूत को छोड़ा–प्रेजेन्ट का प्रेजेन्ट पाया
122–समस्या स्वरूप बनना छोड़ा–समाधान के संसार का आनन्द पाया
123–प्रायश्चित के ॲधेरे को छोड़ा–परिवर्तन का नवीन पथ पाया
124–घुटका खाना छोड़ा–अटूट निश्चय की गरिमा को पाया
125–अवज्ञायें करना छोड़ा–आज्ञाकारीपने से भगवान के वारिस बन गये

126–धूतीपना की धुँध को छोड़ा–दिल की दुआओं का दरवाजा खोल लिया
127–फिजूलखर्ची के बहाव को रोका–फायदे के पराक्रम को पाया
128–परधर्म की परतन्त्रता को छोड़ा–स्वधर्म के स्वराज्य को पाया
129–संस्कारों की गुलामी को छोड़ा–आजादी के मुक्त गगन को पाया
130–दुश्मनी की दुश्चक्र को छोड़ा–निश्छल प्रेम की गंगा को पाया
131–महिमा की चाहना को छोड़ा–महानता की योग्यता को पाया
132–माया के छल–कपट को छोड़ा–ईमानदारी से जीने अन्दाज आ गया
133–गमगीन हवाओं के झोंके को छोड़ा–हुल्लास का आसमॉ छू लिया
134–झूठ की परिपाटी को छोड़ा–सत्य की कसौटी को पाया
135–निराशा के काले बादलों को छोड़ा–भगवान के आशाओं के दीपक बन गया
136–आडम्बरों की दलदल को छोड़ा–सत्य ज्ञान को सहज ही पाया
137–मनहूसियत का दंस छोड़ा–लकीएस्ट का सौभाग्य खुल गया
138–मायूसी की काली घटाओं को छोड़ा–ज्ञानसूर्य की सकाश को पाया
139–अबलापने के दर्द को छोड़ा–शिव शक्ति का स्वरूप पाया
140–दोहरे व्यक्तित्व को छोड़ा–अपने वास्तविक स्वरूप को पाया
141–विनाशी प्राप्तियों से मुख मोड़ा–हर प्राप्ति की चाबी मेरा बाबा पाया
142–जड़जड़ीभूत शरीर से आसक्ति छोड़ी–अन्तःवाहक वाहन मिल गया
143–लौकिक स्वार्थी संबंधों को छोड़ा–एक से सच्चे सर्व संबंधों का सुख मिला
144–पुरानी सड़ी गली बातों को छोड़ा–सेवाओं का बेहतरीन कॉन्सेप्ट मिल गया
145–कमेन्ट के हथौडों के वार को छोड़ा–कामेन्ट्री कराने की कला आ गयी
146–इल्जामों के केस लगाने छोड़े–इलाही की इनायतों के योग्य बन गये
147–उल्हनों के आरोप लगाने छोड़े–प्रसन्नता का आहलाद मिल गया
148–विनाशी धन को पाने की आपाधापी को छोड़ा–स्वर्णिम स्वर्ग की विरासत मिल गयी
149–क्वेश्चनों के गुमराह जंगलों को छोड़ा–समझदारी के अनेक रास्ते मिल गये
150–गृहस्थी की बेदर्द कहानी को छोड़ा–प्रभू की प्रापर्टी का ट्रस्ट पा लिया
151–मन्थरा की कर्कश तमन्ना को छोड़ा–मन को शुद्व संकल्पों का तरावटी माल मिल गया